www.vidyawarta.com

All things in one Educational Website

- College & University News
- Academic Updates
- API Guide lines
- International Research Journals
- ISBN books
- Call for Papers
- Conference & Seminar alerts
- Free Book, PDF articles
- Motivational Quotes
- Maharashtra culture
- Ph.D . & M.Phil.
- Set. Net. Exams Date

Cosmos IMPACT FACTOR

Indexed

IMPACT 6.039 iijif FACTOR

₹ 400/-

ISSN 2394-5303

Edit By

Dr. Gholap Bapu Ganpat

Parli Vaijnath, Dist.Beed 431 515

(Maharashtra, India)

Cell : +91 75 88 05 76 95

Publisher & Owner

Archana Rajendra Ghodke,

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126

(Maharashtra) Mob.09850203295

E-mail: vidyawarta@gmail.com

www.vidyawarta.com

Printing Area Research Journal

Issue-59, Vol-01 November 2019

ISSN 2394-5303

PRINTING® area

Issue-59, Vol-01 November 2019

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with ACE Scanner

27) मावची जमातीचे लोकसाहित्य – क्षेत्रीय अभ्यास
प्रा. डॉ. राजेंद्र वडमारे, जि. अहमदनगर ||127

28) सूफी संत बुल्लेशाह के काव्य में सामाजिक विद्रोह
डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे, जि.नांदेड ||137-140

29) लोक विश्वास ते अंधविश्वास जनेही परम्परां दा खंडण करदी शकुंत दीपमाला हुंदी ...
भूपिन्दर सिंह, जम्मू ||140

30) महिला और मानवाधिकार
प्रा. डॉ. अंजली चौधरी, नांदेड ||142

31) किशोर विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन
श्रीमती प्रतिभा द्विवेदी ||145

32) न्यून साक्षरता के कारणों का सर्वेक्षण एवं उपचारात्मक कार्य योजना निर्माण
Prof. Rajni Sharma & Dr. Buddhi Prakash Goswami ||147

33) क्हानी संग्रैह 'खौ'दल' ते 'अद्ध मझाटै' दियें क्हानियें च चित्रित नारी शोषन दी ...
ज्योति धांप्पा, जम्मू ||152

34) भारत का गिरता आर्थिक विकास दर बनाम मंदी (छ.ग. का तुलनात्मक अध्ययन)
डॉ. (श्रीमती) अनीता मेश्राम, जिला–दुर्ग (छ.ग.) ||155

35) उत्तर अम्बेडकर दलित चिन्तन के संदर्भ में हिन्दी दलित आत्मकथाओं का अध्ययन
राकेश प्रसाद, प्रयागराज ||159

36) तुकाराम और रामदास की सामाजिक भूमिका
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, जि.नांदेड ||161

37) संगीत एवं धर्म परस्पर संबंध
डॉ. मनीषा (दीक्षित) शर्मा, सूरत, गुजरात ||163

38) अनुवादित आत्मकथा 'आयदान' में दलित नारी
डॉ. रजनी शिखरे, जि. बीड ||166

39) प्रभा खेतान के कथा साहत्य में स्त्री चेतना का परिप्रेक्ष्य
भूपेन्द्र प्रताप, प्रयागराज ||168

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

Scanned with ACE Scanner

परंपरा आहे. परंतु मर्यादित लोकसंख्येमुळे त्यांच्या लोकसाहित्याचा फारसा प्रसार झालेला नाही. ते प्रामुख्याने त्यांच्या जमातीपुरतेच मर्यादित राहिलेले आहे. असे असले तरी मावची जमातीचे लोकसाहित्य विकसनशील असून त्यावर अधिक संशोधन झाल्यास मराठी लोकसाहित्याच्या प्रांगणात निश्चितच मौलिक भर पडू शकते.

पारंपरिक मराठी लोकसाहित्य व मावची जमातीचे लोकसाहित्य यात काही साम्यस्थळेही दिसून येतात. दोन्ही लोकसाहित्याचे माध्यम बोलीभाषा हेच असून त्यातून लोकसंस्कृतीचे जिवंत दर्शन घडते. मावची लोकसाहित्याद्वारे मावची संस्कृतीची विकासावस्था समजून घेण्यास मदत होते. त्यामुळे मावची जमातीच्या अभ्यासाला सामाजिक व ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त होते.

संदर्भ ग्रंथ

१. गारे गोविंद — 'सातपुड्यातील भिल्ल', अमृत प्रकाशन, औरंगाबाद, १९८९.

२. भवाळकर तारा — 'लोकसंचित', राजहंस प्रकाशन, पुणे, १९९६.

३. राठवा चामुलाल — 'देहवाली साहित्य', साहित्य अकादमी प्रकाशन, नवी दिल्ली, २००१.

४. सोनार विजया — 'भिल्लांचे वागवैभव', गोदावरी प्रकाशन, औरंगाबाद, १९९९.

५. इंगोले प्रतिमा — 'वऱ्हाडी लोककथा', गोदावरी प्रकाशन, औरंगाबाद, २००२.

६. पगार सयाजी— 'खानदेशातील ग्रामदैवत आणि लोकगीते', का.स.वाणी प्रगत अध्ययन संस्था, धुळे, १९९२.

❑❑❑

28

सूफी संत बुल्लेशाह के काव्य में सामाजिक विद्रोह

डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे

सहाय्यक प्राध्यापक एवं प्रमुख हिंदी विभाग,

हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय जि.नांदेड

सूफी संत बुल्लेशाह के काव्य को समझने के लिए उसके मुल स्त्रोत अर्थात सुफीमत पर प्रकाश डालना होगा। मध्यकालीन काव्य की एक प्रमुख धारा सुफी विचारधारा रही है। सुफीमत को जानने के लिए 'सूफी' शब्द को जानना जरुरी होगा। इस शब्द के बारे में अलग - अलग मत मतांतर रहे हैं। फशफुल महजुब का लेखक हहजरत शेख्र मखदुम अली हुजवचीरी लिखना है की कुछ लोगो ने सुफी उन लोगों को कहा है, जो 'सुफी' के कपडे पहनते थे। अर्थात 'सुफी' फकीर रुप के कपडे पहनते थे इसलिए लोगो ने उन्हे सूफी कहना शुरु कर दिया, इनके इस मत को हिन्दी के अनेक विद्वानो ने सहमती दी हैं।

सूफीयो के अनुसार ईश्वर, खुदा, रब एक ही है। इसी ने सृष्टी की है। वह सर्वव्यापक सृष्टी के चर-चर में विद्मान है। वह सब मनुष्य में वास करता है। इन्सान में इश्क या प्रेम खुदा ने जन्म से ही भर दिया है। इश्क के दो पहले माने गए है। पहला मजाजी इश्क और दुसरा या हकीकी या रुहाणी मजाजी इश्क ही रुहानी या हकीकी इश्क की पहली सीढी हैं।

सूफीमत की आधारशीला ही इस्लाम के महान पैगंबर हजरत मुहम्मद साहिब के चिंतन का फलस्वरुप है। इनका जन्म अरब देश में हुआ और उनका पुरा जीवन, शिक्षा, संदेश, उपदेश, लोगों को खुदा के और कायनात के बारे में जानने व समझने में गुजरा। उनके विचार, चिंतन ही सूफमत का मूल आधार बना। इसलिए सूफीमत अधिकतर मध्य पुरबी देशों इरान, सीरीया, मिश्र, इराक आदी देशें में धीरे-धीरे विकसित हुआ। समय के साथ - साथ इस्लाम का संस्थायी रुप रुढिवादी होता गया और उनके विरोध मे सुफीमत और सदृढ होता गया। सूफीमत का केंद्रीय उद्देश इस्लाम की मुल मानवतावादी भावना को उभारकर हर तरह की कट्टरता से वचना था। सूफीमत ने कुरान के मूल मानवतावादी

Scanned with ACE Scanner

मार्ग को दर्शाया है।

भारत में सूफीमत की लहर मुसलमान आक्रमण से ही आयी है। और सूफी शायरों और संतो ने नौवी व दसवी ईसवी में अपनी शायरी काव्य के प्रभाव से इस्लाम के मूल आधार का यहाँ की परिस्थितियों के अनुकूल प्रचार - प्रसार किया। भारत मे सुफीमत के सिलसिलेचिश्ती, सुहरावरदी, कादरी व नक्शवादी प्रमुख है। जिसकी विश्वभर में संख्या चौदह रह चुकी है।

इन सूफीमत के प्रचारकों ने भारतत के पंजाब प्रदेश में अपनी सभ्यंता व धार्मिक मुल्क स्थापीत करने की भूमिका निभाई। इन चार सिलसिलों में से चिश्ती, सुहरावादी और कादरी आदी तीन सिलसिलों ने पंजाब लोक को समझा और उनसे प्यार मुहब्बत का व्यवहार किया व राज सत्ता और हुकुमत का सहारा भी ले लिया। कई जिज्ञासु सुफियो के मुरीद हो गए। इन मुरीदों ने सूफीयों के उपसिलसिलो को आगे बढाया और पंजाबी सुफी काव्य की रचना की शुरुवात की। पंजाब के सुफीयो मे से अली उस्मान बिन हुजवीरो, शेख फरीद, शाह हुसैन व बुल्लेशाह बहुत प्रसिध्द संत कवि हुए है। जहाँ बाबा फरीद व हुजवीरी दार्शनिक सुफी हुए तो संत कवि बुल्लेशाह की ख्याती एक मानवतावादी एवं सामाजिक दुरदृष्टा विद्रोही समाज सुधारक के रुप में हुई।

बुल्लेशाह का समय सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक संघर्ष से आक्रांत हुआ था। शासकों का अत्याचार युग गदी, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अव्यवस्था तथा अस्त-व्यस्त युग था। आदी के स्पष्ट संकेत बुल्लेशाह की निम्नलिखीत पंक्तियों से मिलता है।

"बुल्लिया कसर नाम कसुर है
ओथे मुंहो सकण न बोल
उथे सच्चे गर्दन भारीए
ओथे झुठे करन कलोल।"

इस तरह बुल्लेशाह ने अपने समय की बिघडी हुई सामाजिक, धार्मिक अव्यवस्था को परखकर, जानकर अपने लोगों को मानवतावादी नजरिया से देखकर उनका जीवन, धर्म, फिरकों, रंगो और जाती को समझा इसलिए लोग सुफीमत के प्रभाव में आए। सूफियोंने अधिकतर इस बात पर जोर दिया कि ईश्वर को पहचानना या समझना किसी व्यक्ति विशेष का ही हक्क नहीं तो सभी जाति-पाँति एंव वर्ग विशेष का एक जैसा ही अधिकार है, और यह भी कहाँ की इसी राह पर किसी करम-कांड की भी आवश्यकता नहीं है, बल्कि सच्ची भावना - प्रित की जरूरत है। इस संबंध में संत बुल्लेशाह कहते हैं।

" भट्ट निजामा ने चिक्कड रोजे
कलमे ते फिर कई सिआही
बुल्लेशाह राहु अंदरो मिलीआ
भुल्ली फिरी लुकाई
जे रब्ब मिलदा मंदर मसीती
तां मिलदा चाम चडिकाआं
जे रब्ब मिलदा हडुआं मच्छिआं
जे रंग मिलदा गडआं वछीआं
बुल्लेशाह रब्ब उन्हा नुं मिलदा
नीता जिन्हा दीआं सच्चीआं।"

सूफीयो ने अपने विचारों से लोंगो को प्रभावित किया और उनमे नई चेतना, नया आत्मविश्वास भरने का प्रयास किया। इस तरह सुफीमत अपने रस्मों - रिवाजो, शरा - शरीअन, कर्मकांड, भेष,पाखंड आदिपर विश्वास नही करता।

कवि बुल्लेशाहह को इस्लामीधर्म, दर्शन और धार्मिक रहु रीनो की सुझ कसुर के आध्यात्मिक माहौल में से ही मिली थी। कवि बुल्लेशाह ने रुहानी विद्या के लिए हजरत इनायत शाह कादिरी को मुर्शिद बनाया। कवि बुल्लेशाहह अपने गुरु धारण के बारे में कहाँ है।

"बुल्लेशाह दी सुणो हिकाइन
हादी पकडीआं होग इदाइन
मेरा मुरशिद शाह इनाइत
आहोलंधावे पार।"

कवित बुल्लेशाहह ने अपने घर - परीवार और भाईचारे का विरोध करके हजरत शाह इनायत अराई जाति के गुरु को स्वीकारा और खुद के सैयद घराने के श्रेष्ठत्व का भ्रम तोड दिया। कवि बुल्लेशाह ने सबके विरोध को नकारकर गुरु होने के मानवीय रिश्तो की तरुदारी की और जाति, रंग, नस्ल व लिंग - भेद की सीमाओ को भी नकारकर कहाँ।

" बुल्ले नुं समझावण भाईआं
भेणा ते भरजाईआं
असी औलाद नबी दा बुल्लीया
तुं किउ लीका लाईआं
मन लं बुल्लिआ साज कहिणा
छड दे पल्ला राईआं
जिहडा सानु सैय्यद आखे
दोजख मिलण सजाईआं
जिहडा साननु अराई आखे

बहिशती पीघां पाईआं
जे तु लोंडे बाग वहारां बुल्लीआ
तालाब हो जा राईआं।"

इसके साथ ही बुल्लेशाह नैशरा के भेष में कर्मकांडों के अंधाधुंद होने के खिलाफ आवाज बुलंद कर मानव जाति का सच्चे दिल से समर्थन भी किया है वे कहते है।

"बुल्लीआ धरमशाला धडवाई वसदे ठाकर दुआरे ठग
विच मसीतां कुसतीए रहीये, आशक रहीण अलग
फुल मुसंला मंन सुंट लोटा, ना फड तसबीह कासासोटा
आलम कहींदा दे दे होका, तरक हंलालो खाह मुरदार।"

बुल्लेशाह ने धार्मिक रीती, रिवाजो के खिलाफ आवाज उठाया है। उन्होने इन रिती रिवाजो मे उलझाने के बजाय इस्लाम के कर्मकांडो के संस्थायी रुप का विरोध करते हुए, सर्वधर्म का सम्मान करते हुए मानवतावादी हितों को पहचानने का काम किया। वे कहते है।

" कहु किस थी आप छुपाईंदा
किते सुंनत फरज दसेंदे ओ
किते मुलां बांग बुलेंदे हो
किते राम दुहाई दें दे हो
किते मत्थे तिलक लगाईंदा
किते चोर हो किथरे काजी हो
किते भिंबर ते बाबाअजी हो
किते तेग बहादर गाजी हो
आपे पर कटक चडाईंदा
हिंन्दु नही मुसलमान,
बहे तिंझण तज अभियान
सुंनी ना नही हम शीया,
सुलाह कुल का मारग लीआ।"

इस्लाम के अनुसार जो इबादत या बंदगी के बुनियादी असुल थे वे महज केदिखावा बनकर रह गए थे। चालीसा काटने वाले पाखंडी साधको की धर्म साधना का बुल्लेशाह ने विरोध कर निंदा की है। उनको पशुओं से भी बदतर माना है। वे कहते है।

" राती जागेकरे खादत
राती जागण कुते तेथो उत्तें
भौंकण भुलो बंदे ना हुंदे
जा रुडी ते सुते तैथों उत्ते
खसम आपणे दा दरना छड्दे
भवें वज्जण जुत्ते तैथों उत्ते
बुल्लेशाह कोई रख्त विहाज लै
नही ते बाजी ले गए कुत्ते तैथों उत्ते।"

कवि बुल्लेशाह ने सभी मानव रहीत अनेक कुकर्मो का विरोध किया है। जिसने इसका समर्थन किया वह सामाजिक रोष का पात्र होता है। यह स्पष्ट रुप से व्यक्त किया है। शराब पीने के अनैतिक व्यवहार का विरोध करते हुए कहाँ है।

"बुल्लिआ पी शराब ते खाइ कबाब
हेठ बाल अड्डां दी अग्ग
चोरी कर ते भंग घर रब दा
ओस ठेगां जुं दे ठग नुँ ठग।
बुल्लिआ खा हराम ते पढ शुकराना
कर तौबा तरक सवाबों
छांड मसीत ने पकड किजारा
तेरी छुटसी जान अंजाबें
बुल्लेशाह चल ओथे चलिए,
जिथे मना जा करन शराबें।"

कवि जाति-पाँति, उच्च-निच्च, धार्मिक आडंबरो, कुरीतीयों, रीति-रिवाजो तथा बाह्याडंबरो से उपर उटकर विरोध बुल्लेशाह ने किया। उनका कहना है कि वेद-कुराण पढने से या तीर्थाटन करने से कोई रब नही मिलता है, केवल वह चमत्कार रोशनी में होता हैं। इसे स्पष्ट करनेसे हुए कहते हैं।

"वेद कुराण पड-पड थके
सिजदे कर दिया घस गए मथ्थे
ना रवद तीरथ ना रब मक्के
जिन पाइआ तिन नुर अनवार
इशक ददी नवीआी नवी बहार।"

कवि बुल्लेशाह ने मुला-मौलवी के ढोंग को फटकारते हुए कहाँ हैं कि, उम्र तो मस्जिदे में गवाँ दी। तेरे अंदर सब गंदगी भरी है। कभी नमाज ठिक ढंग से और सच्चे मन से न पढी है, अब क्यों चीख-पुकार करता है। कवि कहते हैं।

"उमर गवाई विज-मसीती
अंदर भरीआ नाल पलीती
कदें नमाज, वहिदत दा कीती
हुण किउ करना ए धाडो-धाड
इशक दी नवींआं नवी बहार।"

धर्मशाला, मंदिरो और मस्जिद में रहनेवालो को कवि बुल्लेशाह ने धोकेबाज कहकर उनका समाचार लिया है। उनका कहना है कि, धर्मशाला में धोकेबाज रहते है, मंदिरो में रहते ठग

और कोसतीया मस्जिद में रहा है और आशिक (इश्वर) उनसे दुर रहते है। इस बात को व्यक्त कहते हुए बुल्लेशाह कहते है।

" बुल्लेशाह धरमशाला धडवाली रहिंदे ठाकुर दुओर ठग,
विचे मसीतां कोसतीय रहिदे आशक रहिण अलग।"

हिन्दु-मुसलमानों के अंधविश्वासों पर प्रकाश डालते हुए कवि बुल्लेशाह कहते है। कि तुर्क नमाज पढंते हैं, तो कहीं हिन्दु भक्त जाप करते है। इस तरह से वे अंधविश्वासों में ही पडते है। परंतु हरि अपने तो घर में प्रेम फैलाया है। कवि कहते है।

" कहूं तुरक मुसलमां पडते हो,
कहँ भगति हिन्दु जब करते हो,
कहं घोर-घुंडे विच पडनें हो,
हरि घरि-घरि लाड लडाड़आ है।"

इस तरह से बुल्लेशाह ने अंधविश्वासों से व आडंबरो से कोसो दुर रहकर उस खुदा को उसकी कायनात को समझाने का उपदेश दिया है। इसके साथ उन्होने शीत-रिवाजो, थुली, शरा, सौबा, पुराने संस्कार व अन्य धार्मिक रीति-रिवाजो को अंधाधुद पालने का विरोध करते हुए मानवीए प्यार मोहबत दियावे को महत्त्व दिया है। उन्होंने अपनी रचनायों में सभी पाखंडो के बाह्य दिखावे का विरोध किया है। इसके साथ-ही-साथ कवि बुल्लेशाह ने धार्मिक रितियों के सनातनी विचारों के साथ ही प्रचलित नैतिक मर्यादा ओं से बगावत करने का संदेश भी दिया है। बुल्लेशाह ने अपनी रचना में मसीत, नमाज, करान, हज व आत्मिक पवित्रता आदि सब धार्मिक रिति-रीवाजों के प्रति अपनों का मौलिक संदेश दिया है। अस्तु, कवि बुल्लेशाह ने सामंती वर्ग, पुजारी वर्ग, शासन वर्ग व अन्य प्रचलित कर्मकाडों, इख्लाकी कदरों कीमतों का विरोध किया है। बुल्लेशाह ने अपने समय के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, नैतिक मसलो पर बेबाक होकर खा लि है और सामंतो, धर्म-मुल्लाओं गुरुओं, सभी वर्ग के ओहदेदारो की नाराजगी को लताड दिया है। सुफी काव्य धारा के अंतर्गत 'काफी' के अलावा सीरफा, अठवारा, सलोक, दोहरा डिओढ जैसा काव्य रुप व छंद प्रयुक्त हुए है। इस विचार धारा ने पंजाबी काव्य को पवित्रता, श्रेष्ठता एवं आध्यात्मिकता से ओत-प्रोतत है।

संदर्भ सुचि :-

१) ब ख्शीश सिंह 'सुफी कवि बुल्लेशाह' (सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन नई दिल्ली-११०००१)
२) कवि बुल्लेशाह विकिपीडिया

29

लोक विश्वास ते अंधविश्वास जनेही परम्परां दा खंडण करदी शकुंत दीपमाला हुंदी क्हानी 'सुक्खन'

भूपिन्दर सिंह
एम.ए. विद्यार्थी, डोगरी विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू

****

डोगरी साहित्य दे खेत्तरै च शकुंत दीपमाला हुंदा टकोह्दा थाह्र ऐ। इ'नें डोगरी लेखन दी शुरूआत क्हानी लेखन राहें कीती दी ऐ। डोगरी साहित्य दे खेत्तर च इं'दी अपनी इक टकोह्दी पंछान ऐ। इस खेत्तरै च अपने—आपै गी पूरी चाल्ली स्थापत करने आस्तै इ'नें अनथक्क मेह्नत, लगन ते धीरज कन्नै कम्म कीत्ते दा ऐ। शकुंत दीपमाला होरें अपनी पैह्ली डोगरी क्हानी १९८० ब'रै च 'चाचू' नांऽ कन्नै लिखी दी ऐ। इं'दा पैह्ला डोगरी क्हानी संग्रैह् ब'रा २०१५ च 'सुक्खन' नांऽ कन्नै प्रकाशत होआ। इस च कुल सतारां क्हानियां शामल न। इस क्हानी संग्रैह् उप्पर इ'नेंगी प्रो. रामनाथ शास्त्री अवार्ड, डोगरी संस्था पास्सेआ प्राप्त होए दा ऐ।

शकुंत दीपमाला हुंदी पोथी 'सुक्खन' च संकलत क्हानी 'सुक्खन' बेदोस ते मसूम जानवरें दी बली देने दी प्रथा दी धार्मिक हिप्पोक्रेसी उप्पर अधारित इक बड़ी संवेदनशील क्हानी ऐ। जिसदे च प्हाड़ी वातावरण ते इलाकाई धार्मिक प्रथाएं ते परंपराएं दा बड़ा मार्मिक ते यथार्थ चित्रण चत्रोए दा लभदा ऐ। क्हानी दा कथ्य पशुबली दे विशे उप्पर केंद्रत ऐ। जिसदे राहें लेखिका ने उ'नें लोकें दे मनै च बस्से दे अंधविश्वासें गी उजागर कीते दा ऐ, जेह्ड़े प्राईं—प्हाड़ी लोक अपनियें मनोकामनाएं दी पूर्ति आस्तै मातारानी अग्गें सुक्खन करदे न ते पह्ी मुराद पूरी हाने उप्पर देवी मां गी पशुबली देइयै खुश करदे न।

Scanned with ACE Scanner